श्रीनारायण धर्म

श्रीनारायण गुरुदेव

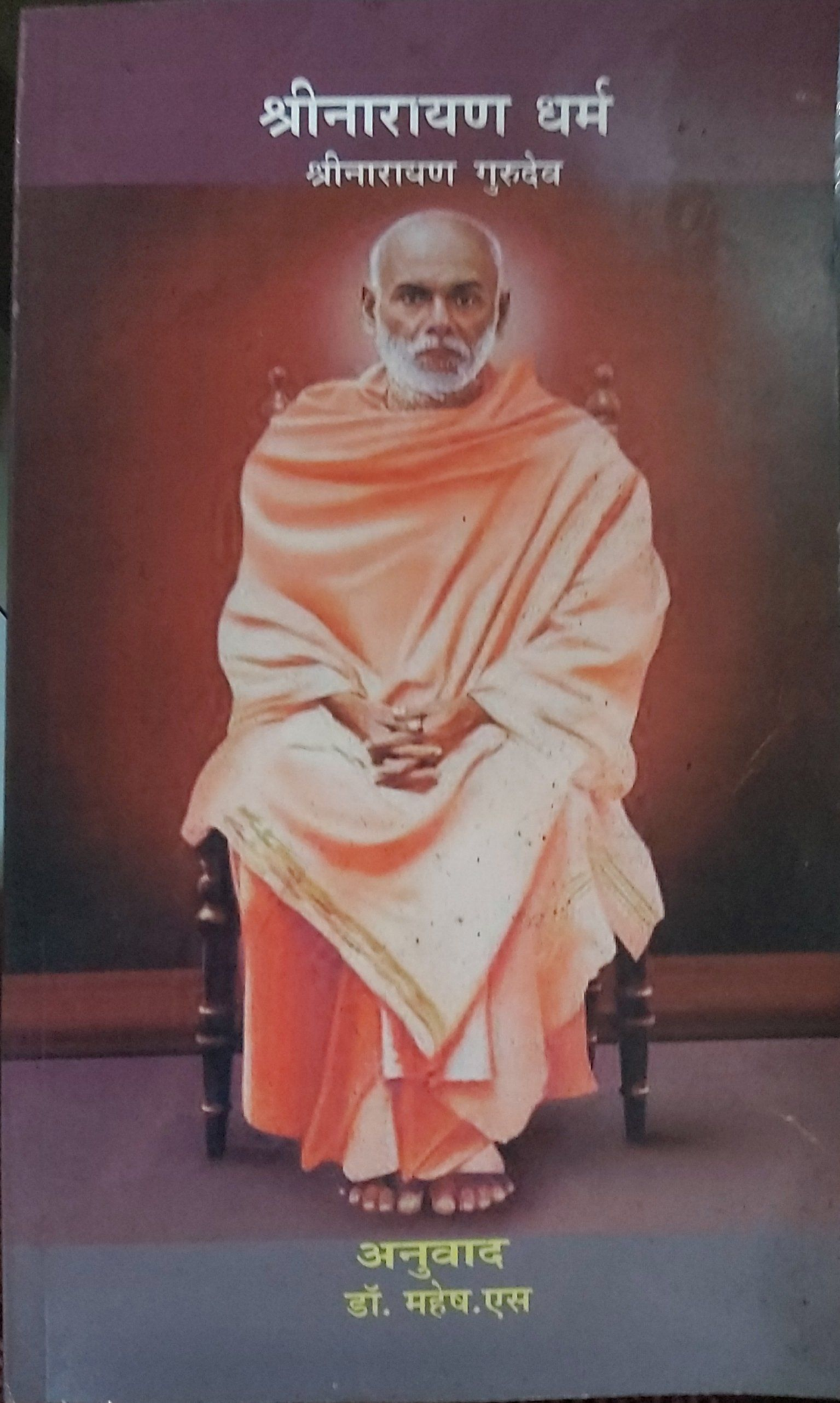

अनुवाद

डॉ. महेष.एस

डॉ.एस महेष का जन्म तिरुवनन्तपुरम जिले के कवडियार में 19 अप्रैल 1976 में हुआ। उनकी माताश्री शेलजा और पिताश्री सोमनाथन हैं। आपके पिताश्री सरकारी सेवा से निवृत्त संयुक्त श्रम आयुक्त *(Joint Labour Commissioner)* है। वे सरकारी सेवा करने के साथ-साथ सामाजिक कार्यकलापों में भी सक्रियता से भाग लेते थे और कर्मचारियों के अनेक संगठनाओं से जुडे हुए थे।

आपकी शिक्षा तिरुवनन्तपुरम के एस.एम.वी.एच.एस में, यूनिवर्सिटी कॉलिज से स्नातक तथा स्नातकोत्तर उपाधि पाने के बाद केरल विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.फिल तथा पि.एच.डी प्राप्त की।

छात्र जीवन से ही महेष को लेखन के प्रति रुचि थी और पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ निकलते रहते थे। कॉलिज अध्ययन के साथ-साथ भावात्मक एकता को संपुष्ट करने की दृष्टि से राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार में वे लगातार संलग्न रहे। महान दार्शनिक, योगी, प्रतिभावान कवि एवं कर्मठ समाजोद्धारक के रूप में लब्ध प्रतिष्ठ श्री नारायण गुरु के प्रति बाल्यकाल से ही महेष के मन में अटूट भक्ति भावना विद्यमान थी जिसका श्रेय उनकी माताजी को है। गुरुदेव जी की अतुल्य प्रसिद्धि-प्राप्त प्रार्थना-गीत 'दैवदशकम' का जो अनुवाद महेष के द्वारा किया गया है उसकी सहृदयों के द्वारा भूरि-भूरि प्रशंसा की गयी है। श्री नारायणगुरु के प्रति महेष के मन में जो श्रद्धा और निष्ठा थी उसी के कारण ही शायद वे श्रीनारायण धर्म की व्यख्या करने को उद्यत हुए। श्री नारायण मन्दिर समिति, मुंबई के प्रमुख श्री दामोधरन जी के प्रति महेष आभारी हैं जिनकी प्रेरणा एवं आशीर्वाद से इस ग्रन्थ का प्रणयन हुआ है। इसकेलिए श्रीनारायण गुरुदेव के भक्त उनके प्रति सदा ऋणी होंगे।

संप्रतिः एस.एन कॉलिज, कोल्लम के हिन्दी विभाग में असिस्टेन्ट प्रोफ़ेसर।

13 9789325717

Sree Narayana Dharmam (Hindi)
(Sree Narayana Guru)

Composed by : Atmananda Swami

Interpreted by : Swami Sree Narayana Theerthar

Translated into Hindi by : Dr. Mahesh S.

Published by : Sree Narayana Mandira Samiti
P. L. Lokhande Marg, Chembur
Mumbai - 400 071.
Email : mumbaisnms@gmail.com
Tel.: 022-25255337/ 25256104

First Edition : 02.09.2018

Copy Right Reserved

Printed at : Bhandup Offset & Designers
1009, Bhandup Industrial Estate
Pannalal Compound,
L.B.S. Marg, Bhandup (W),
Mumbai - 400 078.

Price : Rs. 50/-

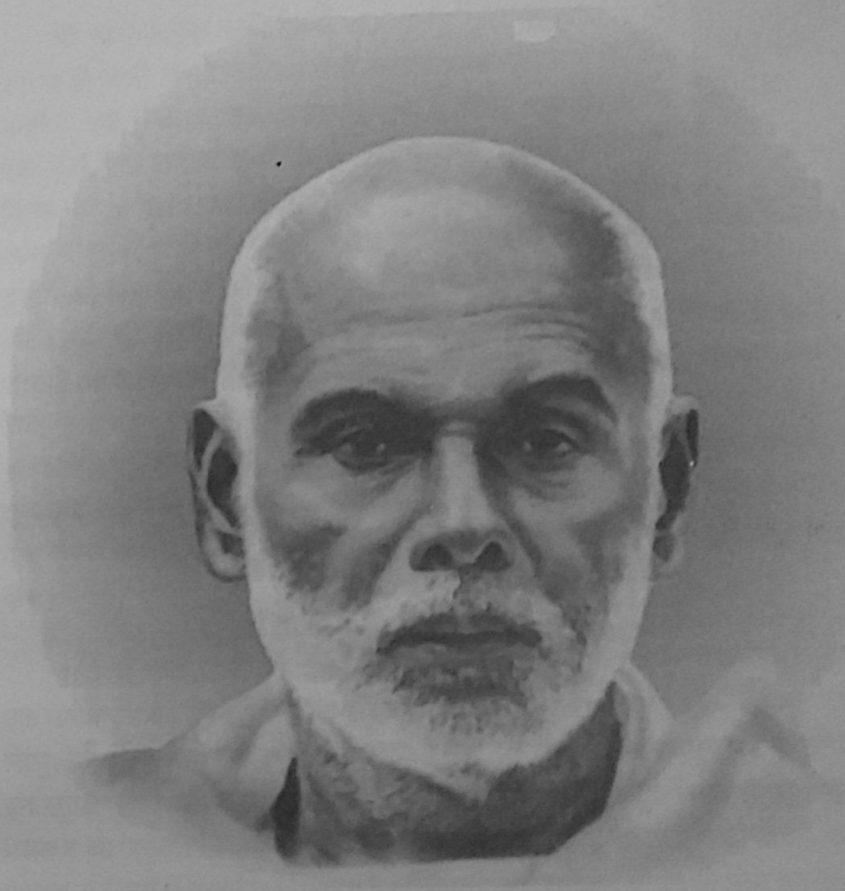

श्रीनारायण गुरुदेव

मनोगत

श्री नारायणगुरू सभी मूल्यों और दुर्लभ गुणों के अवतार थे। शायद ही कभी मानव जाति में ऐसा व्यक्ती पाया नही गया है। एक फकीर, एक शिक्षक, एक दार्शनिक, एक दूरदर्शी, एक वैज्ञानिक, एक संत, एक समाज सुधारक के रूप में उन्होंने राष्ट्र का निर्माण किया। वे एक महान कवि भी थे। उनके लाखो भक्त उन्हें भगवान का अवतार मानते थे। वे एक पुण्यवान, ज्ञानी और सत्य के साधक थे जो दुसरों को आत्मज्ञान देते थे। उनकी शिक्षा से अध्यात्मिक, नैतिक क्रांति हुई। श्री नारायण गुरू ज्ञान के भंडार थे। उनकी महानता, पवित्रता अनंत है। उनके रहस्यों का प्रतिपादन किया है। सदियों से इन आदर्शो को साकार करने के रास्ते प्रदर्शित किए है। भारत की थियोसोफिकल सोसायटी के अनुसार श्री नारायण गुरू योग में पतंजलि, बुद्धि में शंकर मनु भावना और विनम्रता में मोहम्मद की कल्में, एक प्रतिभाशाली खुद एक स्वामी थे। एक पुस्तक में लिखा है कि तथ्य का कोई रहस्य नहीं है। कोई रहस्य बना सूरज और तारे और पृथ्वी के जीव के बीच नहीं, मानवता न राजाओं और शासकों के बीच।

भारत में धर्मशास्त्रों की कोई कमी नहीं। फिर भी श्री नारायण गुरू ने इस प्रकार का एक धर्मशास्त्र का उपदेश क्यों किया ऐसा प्रश्न उठना स्वाभाविक है। यज्ञवल्क्य स्मृति, धर्म सिंधु, मनुस्मृति प्राचेतस स्मृति, आदि कई स्मृति भारत में समयसमय पर लिखी गयी है। इन स्मृतियों को अगर हम जॉच करें तो पायेंगे कि ये सब एक एक समय में जो आचारों का प्रचलन था उसकी नियमावलि के रूप में है। धीरे धीरे जातिप्रथा एक अनाचार के रूप में प्रस्तुत स्मृतियों में देखने को मिलता है। जिसकी जडे मज़बूत बनाने के लिए इन स्मृतियों में कई स्मृतियों ने काम किया है। स्मृति लिखनेवालों ने स्वयं का सिध्दांत भी स्मृति ग्रथों में दिया है।

इस किताब की सामग्री श्री नारायण गुरू द्वारा उनके शिष्यों को दिए गए सवालों के जवाब के लिए दी गई थी। इन सलाहों को उनके शिष्य स्वामी आत्मानंद जी ने कविता के रूप में संस्कृत में लिखा है। और इनको खुद श्री नारायण गुरू ने सुधारा है। इन कविताओं को गुरू के दुसरे अनुयायी श्री नारायण तीर्थरजी द्वारा मलयालम में अनुवादन करके उसे शिवगिरी मठ वर्कला द्वारा श्री नारायण धर्म अथवा श्री नारायण स्मृती नाम से प्रकाशित किया गया।

जो लोग संस्कृत और मलयालम नहीं जानते उनको इस ज्ञान के खजाने को समझकर पढ़ने के लिए समिती इस किताब का हिंदी अनुवादन करना चाहती थी।

समिती के सहायक तथा सांस्कृतिक विभाग सचिव श्री. वी. वी. चंद्रन जी ज्यो गुरु से प्रेरित उनके अनुयायी भक्त है उनकी समर्पण निष्ठा और उत्साह से इसे वास्तविकता प्राप्त हुई है।

मलयालम में लिखी इस किताब का हिंदी अनुवादन डॉ. महेश एस. जी ने किया है। डॉ. महेश एस. जी की शिक्षा तिरुवनन्तपुरम के एस.एन.वी.एच.एस में, यूनिवेर्सिटी कॉलेज से स्नातक तथा स्नातकोत्तर उपाधि पाने के बाद केरल विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.फिल तथा पि.एच.डी प्राप्त की । डॉ. महेश एस एस.एन कॉलेज कोल्लम के हिन्दी विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर है। गुरुदेव की अतुल्य प्रसिद्धि प्राप्त प्रार्थना गीत ' दैवदशकम' का जो अनुवाद महेश के द्वारा किया गया है। उसकी सहृदयों के द्वारा भूरि- भूरि प्रशंसा की गयी है।

इस किताब का अनुवादन तथा प्रकाशन करने में श्री नारायण मंदिर समिती, मुंबई ने अपना सहयोग दर्शाया। इस किताब प्रकाशन के कार्य में श्री नारायण मंदिर समिती, मुंबई के अध्यक्ष एन. शशिधरन, एन. एस. सलिमकुमार, एन. मोहनदास , सांस्कृतिक विभाग और महिला विभाग का बहुमूल्य सहकार्य प्राप्त हुआ।

कुमारी विनिता दिवाकर शर्मा जी ने पूरी बारीकी से और गहराई से किताब में सुधार कर उसका प्रुफरीडिंग किया है। इस किताब की मनमोहक बँधाई एवंम सही छपाई करनेवाले प्रकाशक भांडूप ऑफसेट ॲन्ड डिझाईनर इनका मैं शतश: आभारी हूँ। इस किताब प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ देनेवाले सभी शुभचिंतकों के प्रति मैं मन से कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

एम. आई. दामोदरन
चेअरमन
एस.एन.एम.एस

SREE NARAYANA DHARMA PARIPALANA YOGAM
VELLAPPALLY NATESAN
General Secretary

आशीर्वाद

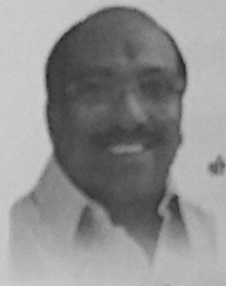

श्री वेल्लापल्लि नटेशन जी

सन्देश

श्रीनारायण धर्म श्री नारायण गुरु द्वारा विरचित एक विशिष्ट कृति है जिसका प्रवचन गुरु ने अपने कुछ शिष्यों की शंका-निवृत्ति केलिए किया था, जो श्रेष्ठ धर्मोपदेशों से भरा है। इस कृति का आलोचन में इसलिए महत्व है कि आज भी मनुष्य धर्म के नाम पर झगड़ते हैं। गुरु का संपूर्ण जीवन धर्मों के समन्वय केलिए समर्पित था। इस कृति में विषय इस रचना में धर्म और अधर्म का विवेचन, जाति-धर्म-ईश्वर पर विचार, सामान्य धर्म संरक्षा, शुद्धि पंचक, आचार धर्म आदि विषयों पर गहराई से विचार किया गया है। स्वामी पहले अपने शिष्यों की जानकारी केलिए जो उपदेश दिये गये थे वे सब आज भी प्रासंगिक हैं।

मुझे आत्मीय प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि डॉ.महेश एस ने प्रस्तुत कृति का अनुवाद राष्ट्रभाषा हिन्दी में करके बड़ा महान प्रयास किया है। इस रचना का अनुवाद हिन्दी में होने से अन्य भारतीय भाषाओं में भी इसके अनुवाद की संभावना है। महेश ने पहले गुरुदेव कृत *दैवदशकम्* का अनुवाद हिन्दी में करके गुरु-चरणों में अपना भक्ति-सुमन चढ़ाया है। डॉ महेश का अभिनन्दन करता हूँ और वे इसके साधुवाद के पात्र हैं। मैं कामना करता हूँ कि महेश आगे भी इस प्रकार का प्रयास जारी रखें। 'गुरु' सरकार इनकी मंगल कामनाएँ करता हूँ।

वेल्लापल्लि नटेशन
जेनरल सेक्रटरी
एस.एन.डी.पी योगम्

कोल्लम
14-4-2018

ONE CASTE, ONE RELIGION, ONE GOD

विषयसूची

भूमिका	1-25
दैवदशकम् (हिन्दी अनुवाद)	26-28
मंगलाचरण	29
प्रथम सर्ग वर्कला वर्णन	30-33
द्वितीय सर्ग धर्म-अधर्म विवेचन	34-51
तृतीय सर्ग सामान्य धर्म समीक्षा	52-61
चतुर्थ सर्ग सूतक, प्रसूति-उपचार	62-67
पंचम सर्ग आश्रम धर्म	68-73
छठा सर्ग ब्रह्मचर्य	74-83
सातवाँ सर्ग गार्हस्थ्य धर्म	84-89
आठवाँ सर्ग पंचमहायज्ञ	90-105
नवम सर्ग अन्त्येष्टि कर्म	106-109
दशम सर्ग संन्यास	110-121